❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

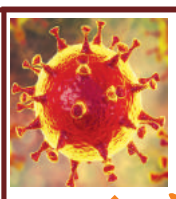

कोरोना वायरस संक्रमण
सतर्क रहें - सुरक्षित रहें
सरकार के निर्देशों का पालन करें
स्वयं बचें - परिवार बचाएं- देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 जून, 2020 से रविवार 14 जून, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के तत्त्वावधान में पर्यावरण दिवस पर विशेष परिचर्चा सम्पन्न

देशभर की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं ने किए पर्यावरण शुद्धि यज्ञ एवं वृक्षारोपण

राज्पाल आचार्य देवव्रत जी, श्री गंगा प्रसाद जी एवं आर्य सांसदों सहित प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों की रही भागीदारी

विश्व पर्यावरण दिवस पर स्वच्छता का लें - संकल्प
- गंगा प्रसाद, राज्यपाल सिक्किम

राष्ट्र को सर्वोपरि मानने वाला संगठन है-आर्यसमाज
- आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

वृक्ष हैं पृथ्वी का श्रृंगार - करते जीवन संचार
- स्वामी सुमेधानन्द, सांसद (सीकर)

संपूर्ण विश्व में आर्य समाज जैसी संस्था नहीं
- डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद (बागपत)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने दी शुभकामनाएं

प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने किया स्वागत एवं धन्यवाद

जूम एप्प के माध्यम से हुई परिचर्चा

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। आर्य समाज सदैव पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम् भूमिका निभाता आ रहा है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 5 जून, 2020 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर भारत सहित विश्व की लगभग सभी आर्य समाजों ने विशेष यज्ञों का आयोजन करके पर्यावरण दिवस मनाया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से जूम ऐप के माध्यम से एक विशिष्ट परिचर्चा का आयोजन भी किया गया। जिसमें पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद आर्य जी, मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, बागपत लोकसभा से सांसद और गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति डॉ सत्यपाल सिंह जी, आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी एवं सीकर लोकसभा से सांसद स्वामी सुमेधानंद जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, उत्तराखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विनय विद्यालंकार जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मास्टर रामपाल जी, आचार्य सनत् कुमार जी , आचार्य कमलेश शास्त्री जी एवं भारत के समस्त प्रांतीय सभाओं के सम्मानित प्रधान, मंत्री एवं कार्यकर्ता गण तथा अन्य अनेक अधिकारी महानुभावों ने इस सभा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर यह सिद्ध किया कि आर्य समाज पर्यावरण संरक्षण के लिए जहां एक तरफ कृतसंकल्प है वही आज चिंतित भी है कि जिस तरह से सारी स्थितियां-परिस्थितियां बदल रही हैं और अनेकानेक मनुष्य काल के गाल में समाते जा रहे हैं, हर रोज एक नया प्राकृतिक रौद्र रूप सामने आ रहा है, इससे किस तरह से मानवता की रक्षा होगी और कैसे मानव समाज बच पाएगा?

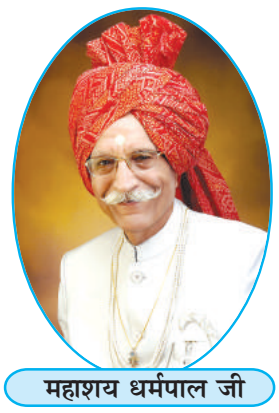

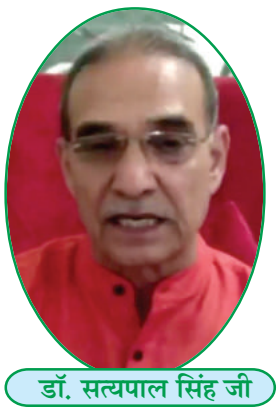

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने सभी विशिष्ट जनों और सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए अपने संदेश में कहा कि आज संपूर्ण विश्व में बिगड़ता पर्यावरण मानव मात्र के लिए एक चिंता का विषय है। अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में आग लगी हुई है, जंगल के जंगल खाली होते जा रहे हैं। वहीं ग्लेशियर पिघल रहे हैं और अनेक स्थानों पर इसके साथ-साथ साइक्लोन पर साइक्लोन आ रहे हैं, बंगाल के बाद मुंबई और गुजरात में जो साइक्लोन

- शेष पृष्ठ 4,5,6 पर

महाशय धर्मपाल जी

आचार्य देवव्रत जी

श्री गंगा प्रसाद जी

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी

स्वामी सुमेधानन्द जी

डॉ. सत्यपाल सिंह जी

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर उत्साह के साथ करें योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन, प्राणायाम, व्यायाम का आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के छठवें आयोजन 21 जून 2020 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सत्संग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के सम्बन्ध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं। **विशेष नोट :** 1. कोरोना वायरस के संक्रमण को दृष्टिगत रखते हुए सरकार एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना अत्यावश्यक है। 2. योग दिवस पर के आयोजन की फोटो सभा के व्हाट्एप्प नं. 7428894010 पर भेजें।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, संरक्षक — सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान — प्रकाश आर्य, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद-स्वाध्याय

श्रद्धा से सत्य – परमात्मा प्राप्ति

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्नोति।। यजु० 19/30
ऋषि : हैमवर्चि:।। देवता – यज्ञ:।। छन्द: अनुष्टुप।।

शब्दार्थ – **व्रतेन** = व्रत से, सत्यनिमय के पालन से मनुष्य **दीक्षाम्** = दीक्षा को, प्रवेश को **आप्नोति** = प्राप्त करता है। **दीक्षया** = दीक्षा से **दक्षिणाम्** = दक्षिणा को, वृद्धि को, बढ़ती को **आप्नोति** = प्राप्त करता है। **दक्षिणा** = दक्षिणा से **श्रद्धाम्** = श्रद्धा को **आप्नोति** = प्राप्त करता है और **श्रद्धया** = श्रद्धा के द्वारा सदा **सत्यम्** = सत्य को **आप्यते** = प्राप्त किया जाता है।

विनय – प्यारे! क्या तू सत्य को पाने के लिए व्याकुल हो गया है? यदि हां तो तू आ, इन चार सीढ़ियों द्वारा तो अवश्य 'सत्य' को पा जाएगा। प्रारंभ में यदि तुझे सचमुच सत्य से प्रेम है तो तुझे जहां कहीं जो कोई सच्चा नियम, सत्य नियम, व्रत पता लगेगा तो उसे अवश्य पालन करने लग पड़ेगा। इस तरह व्रतों को जानने वाले और यथाशक्ति पालन करने की तेरी प्रवृत्ति तुझे शीघ्र दीक्षा का पात्र बना देगी। दीक्षित हो जाने पर तू पहली सीढ़ी चढ़ जाएगा। दीक्षित हो जाना मानो सत्य के साम्राज्य में घुसने का प्रवेश पत्र (परवाना) पा लेना है और सत्य के दरबार में पहुंचने का अधिकारी बन जाना है। दीक्षित हो जाने की इस पहली सीढ़ी पर जब तू चढ़ जाएगा तो तू सत्य के वायु मंडल में रहने वाला हो जाएगा और तेरा सत्यप्रेमी साथियों का परिवार बन जाएगा। तब तेरे लिए अपने अन्य सत्य पथिक भाइयों के अनुभव से लाभ उठाते हुए सत्य नियमों को जान लेना और उनका यथावत पालन करना बहुत सहज हो जाएगा एवं आगे आगे सत्य के पालन में अभ्यस्त होता हुआ तू तीसरी सीढ़ी पर भी तब पहुंच जाएगा। जब तुझे यह स्वात्मा अनुभव हो जाएगा कि सत्य के पालन से तेरी वृद्धि (दक्षिणा) होती है। तेरी उन्नति होती है। तब तो स्वयमेव अनुभव करेगा कि सत्य के पालन से तो बलवान और उन्नत हो रहा है। कुछ आश्चर्य नहीं, यदि उस समय बाहर का संसार भी तुझे प्रतिष्ठा देता हुआ और तेरे प्रति नानाविध दक्षिणाएं लाता हुआ तेरी दक्षता, बलवत्ता और बढ़ती को स्वीकार करे। तुझे अपने आप तो अपनी वृद्धि अनुभूत होगी ही। यह अनुभव ही तुझ में सत्य के लिए श्रद्धा उत्पन्न कर देगा और तुझे श्रद्धा की तीसरी सीढ़ी पर पहुंचा देगा। तब तुझमें सत्य के लिए ऐसी अटल श्रद्धा हो जाएगी कि तू त्रिकाल में भी यह शक न करेगा कि कभी सत्य तेरी हानि भी कर सकता है। श्रद्धा पा जाने पर मनुष्य बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ने लगता है। अत: जब तू अपनी श्रद्धा में मग्न होकर सत्य के –केवल सत्य के–पा लेने के लिए व्याकुल एवं एकाग्र होकर अग्रसर हो रहा होगा तो इससे अगली उच्च सीढ़ी पर पैर रखते ही तुझे सत्य के दर्शन हो जाएंगे, सत्य का साक्षात्कार हो जाएगा। अपने प्यारे सत्य का साक्षात्कार हो जाएगा।

–: साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दिल्ली दंगों में पिंजरा तोड़ ग्रुप की भूमिका

फिर खुली वामपंथ मीडिया मंच की पोल

.....दंगों के बाद इनके पहले मोर्चे ने कमान सम्हाली और कहा कि हिन्दुस्तान की ताकत भाईचारा, एकता और प्यार को दिल्ली में जलाया गया है, लेकिन किसी ने सवाल नही किया कि छतों पर हथियार जमा करती लामबंदियां किसकी थीं? सीएए विरोध का 'कैनवास' अलीगढ़ से शहडोल-जबलपुर तक कौन फैला रहा था? और किसने होली से पहले दिल्ली के माहौल में खूनी रंग भरे और आर-पार की लड़ाई के नारे कौन लगा रहा था? ये सवाल अभी गायब हैं इसलिए ध्यान रखिये संवेदना बहुत ही सुंदर और महत्वपूर्ण चीज है, पर वह कितनी होनी चाहिए, दाल में नमक बराबर, सिर्फ स्वाद भर, मुट्ठी भर नहीं।.....

हाल ही में अमेरिका में अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के बाद पूरे अमेरिका में विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। वहां लोग सड़कों पर उतारकर ट्रम्प सरकार का विरोध कर रहे हैं। इसी विरोध को देखकर भारत में वामपंथी भी अपनी रक्त पिपासु जीभ से फिर लोगों का रक्त पीना चाहते हैं। भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने एक वेबसाइट द क्विंट की एक ऐसी ही अपील के स्क्रीनशॉट ट्विटर पर पोस्ट करते हुए लिखा है कि किस प्रकार 'द क्विंट' भारत के लोगों को उकसाकर उन्हें सड़कों पर उतर आने की अपील कर रहा है। यही नहीं इस ट्वीट में कपिल मिश्रा ने ये भी लिखा है कि 'द क्विंट' ने देश भर में हजारों ईमेल भेजी हैं और लोगों से अपील की हैं कि अमेरिका की तरह भारत में सड़कों पर लोग उतरें और दंगे करें।

असल में साल 2015 में दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े कई लोगों ने एक समूह बनाया था जिसका नाम है ग्रुप ऑफ इंटेलेक्चुअल एंड एकेडेमीज यानि जीआईए ने दिल्ली दंगों पर जाँच के बाद अपनी एक रिपोर्ट सौंपी थी। इस समूह ने अपनी रिपोर्ट में दिल्ली हिंसा की राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा जांच कराए जाने की बात भी कही थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि ये हिंसा एक शहरी नक्सल-जिहादी नेटवर्क का सबूत था, इसमें दिल्ली के विश्वविद्यालयों में काम कर रहे वामपंथी अर्बन नक्सल नेटवर्क द्वारा दंगों की योजना बनाई और उसे अंजाम दिया। यानि दिल्ली हिंसा एक सुनयोजित प्लान था, पिंजरा तोड़ गैंग के सामने आने के बाद साफ हो गया है कि यह वामपंथी-जिहादी मॉडल का सबूत था जिसे दिल्ली में अंजाम दिया गया। और अब इस सफल माडल को अन्य स्थानों पर दोहराए जाने की भी कोशिश है।

दिल्ली दंगे के समय बीबीसी द्वारा इस एकतरफा और भड़काऊ रिपोर्टिंग के कारण सरकारी प्रसारण एजेंसी प्रसार भारती के सीईओ शशि शेखर वेमपति ने बीबीसी को जमकर लताड़ लगाई थी। लेकिन लगाते रहो लताड़, उनका काम हो गया था, जो वह लोग चाहते थे। यानि हिंसा करने वाले धड़े को विश्व भर में मासूम दिखाना और लुटने वाले हिन्दुओं समेत दूसरे वर्गों को साम्प्रदायिक दिखाना।

दिल्ली दंगे से पहले मीडिया का यह वर्ग सीएए के साथ राष्ट नागरिकता पंजीकरण का पुछल्ला लगाकर मुस्लिम समाज के मन में झूठा डर भरने में लगा था। हर दिन पहले से तीखे, तेज और कड़वे-कसैले होते इस मीडिया के लिए यह दंगा पूरी घटना को एक खास रंग देने और मुस्लिम उत्पीड़न की कहानियां गढ़ने का मौका था। अखबारों के पन्ने प्राइम-टाइम की टीवी बहस, जहां इस्लामी प्रताड़ना से पलायन करने वालों के आंसुओं और सीएए के सकारात्मक पक्ष को कभी चर्चा के लायक नहीं समझा गया बाद में वे सारे वामपंथी मीडिया मंच दंगों को सिर्फ 'हिंसक हिंदुओं का उत्पात' बताने-साबित करने में जुट गए।

केवल मीडिया ही नहीं इनका एक पूरा समूह होता है। उस समूह में सबकी जिम्मेदारी तय होती है। पहला राजनितिक धड़ा इनका काम होता बयान देना ये लोग दलित और मजदूर के हितों के बयान देंगे यानि अपने बयानों से दलितों और मजदूरों के मन में एक चिंगारी पैदा करेंगे ताकि उनके स्वार्थ का तंदूर गरम रहे। हालाँकि इनके पास देश या दुनिया के किसी कोने में इन दोनों की भलाई का ऐसा कोई 'मॉडल' नहीं है, जिनसे उनका भला हुआ हो इसलिए आज इनके निशाने पर भारत का गरीब दलित और मजदूर वर्ग है। घटनाओं को जाति-धर्म, ऊंच-नीच के चश्मे से दिखाते हैं, हालाँकि हाल ही में कई बार ऐसे मौके आए जब औरों का घर जलाकर हाथ सेंकने वाले इन राजनितिक महारथियों का झूठ पकड़ा गया।

अगर इनका दंगे के प्रबंधन को देखें तो इनका मोर्चा सिनर्जी का है, यानी अलग होकर भी एक रहना और अपनी साझा ताकत को दोगुने की बजाय चार गुना करना, यह वह मोर्चा है जहां इनकी कट्टरता को मीडिया का एक वर्ग पूरी बेशर्मी से विखंडन की राजनीति के साथ सिनर्जी कायम करता नजर आता है। आतंकी को गिरफ्तारी के बाद छात्र बताना, देश के टुकड़े करने वाला शरजील इमाम इसी मोर्चे पर कई बौद्धिक लेख लिखने वाले पत्रकार के तौर पर तैनात था, उसे भी बाद में छात्र बताया गया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कट्टरता पर कायम रहने और इसे सेकुलर लबादे से ढकने की तरकीब बताती खातून भी अब तक वरिष्ठ पत्रकार के वेश में थीं। दिल्ली हिंसा में पहले आम आदमी पार्टी के पार्षद ताहिर हुसैन का शामिल होना, फिर कांग्रेस की पूर्व निगम पार्षद इशरत जहां का नाम सामने आना एक इशारा जरूर कर कर रहा है दिल्ली को हिंसा, उपद्रव और अराजकता में झोंकने के मामले में भी दोनों के इरादे एक-दूसरे से अलग नहीं थे। क्योंकि ताहिर की छत से जिस तरह पेट्रोल बम लोगों पर फेंके गए, गोलियां चलाई गयी, छत से पत्थर बरामद हुए हैं, वह साफ जाहिर करता है कि नफरत की भट्टी में जला ताहिर दंगा करने की पूरी तैयारी से बैठा था।

यानि हर एक चीज का पूरा ध्यान रखा गया राजधानी स्कूल के मालिक का नाम मुस्लिम था, स्कूल सुरक्षित रहा। लेकिन डीपीआर कॉन्वेंट फूंक डाला गया, क्योंकि उसका मालिक हिन्दू था। दंगों के बाद इनके पहले मोर्चे ने कमान सम्हाली और कहा कि हिन्दुस्तान की ताकत भाईचारा, एकता और प्यार को दिल्ली में जलाया गया है, लेकिन किसी ने सवाल नही किया कि छतों पर हथियार जमा करती लामबंदियां किसकी थीं?सीएए विरोध का 'कैनवास' अलीगढ़ से शहडोल-जबलपुर तक कौन फैला रहा था? और किसने होली से पहले दिल्ली के माहौल में खूनी रंग भरे और आर-पार की लड़ाई के नारे कौन लगा रहा था? ये सवाल अभी गायब है इसलिए ध्यान रखिये संवेदना बहुत ही सुंदर और महत्वपूर्ण चीज है, पर वह कितनी होनी चाहिए, दाल में नमक बराबर, सिर्फ स्वाद भर मुट्ठी भर नहीं। अगर 'द क्विंट' बीबीसी समेत वामपंथी मीडिया द्वारा दिखाए जा रहे अब्दुल के दर्द और गरीब आसिफा की दर्द भरी कहानी से आपकी संवेदना जाग गई है तो उसे वापस थपकी देकर सुला दीजिए और छुट्टी पर गई अपनी तार्किकता और व्यावहारिक बुद्धि को व्हाट्सएप कर दीजिए कि छुट्टी खत्म हो गई, वापस आ जाए, यह मनोवैज्ञानिक युद्ध है और इसे मिलकर लड़ेंगे।

– सम्पादक

मजहब को बदनाम किसने किया?

..... आखिर मजहब को बदनाम कर कौन रहा है, हत्यारे या विरोध करने वाले? ये सवाल कोई इनसे नहीं पूछता, दिल्ली के ही मानसरोवर पार्क में आदिल नाम लड़का रिया गौतम की दिन दहाड़े हत्या कर देता है, सब नरमपंथी मौन रहते हैं। लेकिन जैसे ही बहुसंख्यक वर्ग इसका विरोध करता है तो इस्लामफोबिया हो जाता है मजहब को बदनाम करने साजिश बताया जाता है। .....हमेशा कहा जाता है इस्लाम एक शांति का मजहब है। चलो मान लिया, शांतिप्रिय लोगों की संख्या अस्सी फीसदी से ज्यादा है। लेकिन इन लोगों ने आज तक क्या किया? क्या कभी किसी हत्या, हिंसा या दंगे का विरोध किया? क्या कभी किसी कट्टरपंथी के खिलाफ फतवा दिया? शायद नहीं! फिर मजहब को बदनाम कौन कर रहा है?.....

इस्लामफोबिया की वास्तविकता से रूबरू करता लेख

कई महीनों पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने एक शब्द इजाद किया था इस्लामफोबिया। आज कल इस्लामफोबिया नाम का इस शब्द का इस्तेमाल भारत में बखूबी हो रहा है। कई मंजे पत्रकारों से लेकर कथित सामाजिक कार्यकर्ता और कुछ नेता इस शब्द के सहारे अपनी अपनी राजनीति चमका रहे हैं।

अच्छा ये इस्लामफोबिया कहा किसे जा रहा है जैसे अप्रैल माह में लॉकडाउन के दौरान मध्य प्रदेश के भोपाल और उत्तर प्रदेश के बरेली में जब पुलिस तब्लिगियों के बारे में जानकारी करने पहुंची तो अचानक मजहब विशेष से जुड़े कुछ लोगों द्वारा उन पर हमला कर दिया गया। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में कोरोना जांच करने गई मेडिकल टीम पर हमला हुआ है। यह घटना जिले के नागफनी थाने के हाजी नेब की मस्जिद इलाके में हुई है। बिहार के औरंगाबाद में भी स्वास्थ्य विभाग की टीम पर मजहब विशेष से जुड़े ग्रामीणों ने हमला किया। डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मियों को पीटा गया। वाहन में भी तोड़फोड़ की गई। इससे पहले मेरठ में मस्जिद के इमाम समेत 4 लोगों ने अधिकारियों की टीम पर हमला कर दिया था। गाजियाबाद में महिला मेडिकल स्टाफ से अश्लीलता की गयी और भी ऐसे अनेकों मामले हुए जो मजहबी तकरीर करके किये गये। जिनका मजहब विशेष के धर्मगुरुओं की तरफ से कोई विरोध नहीं किया गया न इन हमलावरों पर फतवें जारी हुए।

लेकिन जब इनके खिलाफ मीडिया के कुछ पत्रकार खड़े हुए और सोशल मीडिया पर डॉक्टर्स और पुलिस का धन्यवाद कर रहे लोगों ने भी आपत्ति जताई तो इसे इस्लामफोबिया कहा गया कि ये कहा कि लोग हमारे मजहब को बदनाम कर रहे है।

तब्लिगियों द्वारा मचाया गये इस हिंसक उत्पात के खिलाफ न तो ओवैसी बंधू, न इस पर आरफा खानम की आवाज उठी न वो असंख्य धर्मगुरु इसके खिलाफ मज्जमत करने आये जो एक मुस्लिम लड़की गीता के मात्र श्लोक गाने पर फतवें तक जारी देते हैं। और न ही वो मौलाना बोले जो शाम को मीडिया के स्टूडियो में बैठकर गंगा-जमुनी तहजीब का पाठ पढ़ा जाते हैं। फिर आखिर मजहब को बदनाम कौन कर रहा है? कट्टरपंथी मुस्लिम या अन्य समुदाय मुसलमान? आखिर क्या कारण है कि हिंसा उपद्रव और उत्पात करने से मजहब बदनाम नहीं होता लेकिन इस सबका विरोध करो तो बदनाम हो जाता है?

हो तो कुछ ऐसा ही रहा है शाहीन बाग में देश विरोधी बयान आयें। सब नरमपंथी मुस्लिम खामोश रहे, वहां से हिंसा के लिए उकसाया गया जैसा कि मामले पुलिस ने भी कहा है नरमपंथी मुस्लिम खामोश रहे, नतीजा दिल्ली में हिंसा दंगा लेकिन नरमपंथी मुस्लिम यहाँ भी खामोश रहे। अगर कुछ ने जबान खोली तो बहुसंख्यक वर्ग पर आरोप लगाये। किन्तु जैसे ही इस हिंसा में कई कट्टरपंथियों की भूमिका संदिग्ध पाई गयी उनकी गिरफ्तारियां हुई तो नरमपंथियों की और से कहा गया कि इस्लामफोबिया हमारे मजहब को बदनाम किया जा रहा है।

मजहबी खेल समझिये जब तक कट्टरपंथी अलगाव हिंसा या असामाजिक अनैतिक कृत्य करते रहेंगे नरमपंथी धड़ा जैसे सेकुलर कहा जाता है वह खामोश बना रहेगा। क्योंकि ये लोग जानते है कि पहला धड़ा मजहब के लिए काम कर रहा है, लेकिन जैसे ही अन्य वर्ग इसका विरोध करता है तो तब कट्टरपंथी पीछे हट जाते हैं और कमान नरमपंथियों के हाथ में थमा दी जाती है। नरमपंथियों की जमात मीडिया, सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व संचार माध्यमों से शोर मचा देते है कि देखिये साहब हिन्दुस्तान में किस तरह अल्पसंख्यक वर्ग को टारगेट किया जा रहा है। अचानक मजहबी अभिनेताओं को भारत में डर लगने लगता है, देश के उच्च पदों पर बैठे नरमपंथी कट्टरपंथ की ढाल बन जाते हैं।

वैसे राजनीति में इसे चैक एंड बेलेंस का खेल कहा जाता है अर्थात् चेक करें अगर शोर न हो तो कर रहे हैं। किन्तु अगर किसी कारण शोर मचे तो दूसरा उसे बेलेंस बना ले। बस यही तो हो रहा है इसी सिम्पल से सूत्र से पिछले सत्तर साल से इस देश की राजनीति का गणित हल किया जा रहा है।

आप खुद देखिये दिल्ली के ख्याला इलाके में एक लड़का अंकित सक्सेना दूसरे मजहब की लड़की से शादी करना चाहता था लेकिन मजहबी मानसिकता से ग्रस्त कई लोग उसकी दिन-दहाड़े गला रेतकर हत्या कर देते हैं। कोई नरमपंथी इसकी मजम्मत नहीं करता - न ओवैसी सामने आता और न मजहबी धर्मगुरु। लेकिन जैसे ही बहुसंख्यक वर्ग उग्र होता है निंदा करता है, तो नरमपंथियों द्वारा कमान सम्हाली जाती है और कहा जाता है कि एक घटना से आप समूचे मजहब को बदनाम कर रहे हैं?

लोगों ने बात मान ली। लेकिन इसके कुछ दिन बाद दिल्ली के मोती नगर इलाके में ध्रुव त्यागी की हत्या कर दी जाती है। कारण ध्रुव त्यागी की बेटी को रोजाना कुछ कट्टरपंथी छेड़ते थे जैसे ही एक दिन ध्रुव त्यागी ने इसका विरोध किया तो उसका काम तमाम। तब एक भी नरमपंथियों की जमात से सामने नहीं आता। न ओवैसी का बयान आता, न इनके कथित धर्म गुरुओं का। लेकिन जैसे ही इसके खिलाफ आक्रोश उत्पन्न होता तो अचानक नरम पंथियों की जमात टूट पड़ती है कि एक मामले से सारे मजहब को बदनाम किया जा रहा है।

आखिर मजहब को बदनाम कर कौन रहा है हत्यारे या विरोध करने वाले? ये सवाल कोई इनसे नहीं पूछता, दिल्ली के ही मानसरोवर पार्क में आदिल नाम लड़का रिया गौतम की हत्या दिन दहाड़े हत्या कर देता है, सब नरमपंथी मौन रहते हैं। लेकिन जैसे ही बहुसंख्यक वर्ग इसका विरोध करता है तो इस्लामफोबिया हो जाता है मजहब को बदनाम करने साजिश बताया जाता है। हमेशा कहा जाता है इस्लाम एक शांति का मजहब है। चलो मान लिया, शांतिप्रिय लोगों की संख्या अस्सी फीसदी से ज्यादा है। लेकिन इन लोगों ने आज तक क्या किया? क्या कभी किसी हत्या, हिंसा या दंगे का विरोध किया? क्या कभी किसी कट्टरपंथी के खिलाफ फतवा दिया? शायद नहीं! फिर मजहब को बदनाम कौन कर रहा है?

बल्कि विश्व कि प्रतिष्ठित जाँच एजेंसियों का निष्कर्ष है कुल मुस्लिम जनसंख्या का 15 से 20 फीसदी ही कट्टरवादी है। यानी 18 से 20 करोड़ जिहादियों के ऊपर ही पश्चिमी सभ्यता के विनाश का अंधा जुनून सवार है। शायद यह संख्या अमेरिका की जनसख्या के बराबर हो। लेकिन इसकी चिंता विश्व को क्यों हो? आप मानव इतिहास का कोई भी पन्ना उठाकर देख लो, यह सच है कि अधिकांश जर्मन शांतिप्रिय लोग थे। फिर भी हिंसक नाजियों के कारण 6 करोड़ मासूम लोग मारे गये। नाजियों के यातना शिविरों में 1.4 करोड़ लोग मारे गये, जिनमें 60 लाख यहूदी थे। तब अधिकतर शांतिप्रिय लोग क्या कर पाये? कुछ नहीं।

उसी तरह अधिकांश रुसी शांतिप्रिय थे, लेकिन कट्टर वामपंथियो द्वारा 2 करोड़ मासूम लोग मार डाले गये। तब अधिकतर शांतिप्रिय लोग क्या कर पायें? कुछ नहीं।

चीनियों को देख लीजिये अधिकतर चीनी शांतिप्रिय लोग थे। लेकिन खूंखार वामपंथियों द्वारा करोड़ों लोग काट डाले गये, तब अधिकतर शांतिप्रिय लोग क्या कर पाये? कुछ नहीं।

जापान को देख लो, अधिकांश जापानी लोग शांतिप्रिय थे, किन्तु दूसरे विश्व युद्ध में जापानी फौज ने पूर्व एशिया में 1.2 करोड़ लोग नुकीली संगीनों से काट दिए गये, तब अधिकतर शांतिप्रिय लोग क्या कर पाये? कुछ नहीं।

11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका में 23 लाख अरब मुस्लिम मौजूद थे, जिनमें अधिकांश शांतिप्रिय थे। लेकिन 19 जिहादियों द्वारा वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर हमला किया। 3 हजार लोग मौत के घाट उतार दिए। अमेरिका को घुटनों पर ला दिया, तब 23 लाख शांतिप्रिय लोग क्या कर पाये? कुछ नहीं।

इसी तरह देखें तो 9 सितम्बर 2008 भारत में करीब 15 करोड़ मुस्लिम मौजूद थे, किन्तु चार जिहादियों ने ताज होटल पर हमला कर 250 से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सुला दिया। तब 15 करोड़ शांतिप्रिय लोग क्या कर पाए?

सवाल अब फिर वही है कि इस्लाम को बदनाम किसने किया? आज दुनिया में दस बड़े कट्टरपंथी संगठन किसके है? इस्लामिक इस्टेट किसके लिए काम कर रहा है? अलकायदा के सिपाही किसके लिए काम कर रहे है? तालिबान और पाकिस्तान का तहरीक-ए-तालिबान के लड़ाके किसके लिए हिंसा कर रहे हैं? बोको हरम, अल नुस्रा फ्रन्ट हिजबुल्लाह, हमास, लश्कर ए तैय्ब्बा, जैश ए मोहम्मद, हिजबुल मुजाहिदीन जैसे अनेकों छोटे-बड़े संगठन आखिर किसके लिए हिंसा कर रहे है? जवाब होगा मजहब के लिए और जो लोग जिन्हें नरमपंथी मुस्लिम कहा जाता है वो अगर इसका विरोध नहीं करते तो वह बोलिए वह किसके लिए काम कर रहे हैं? जवाब साफ है मजहब के लिए? पिछले दिनों शाहीन बाग से एक लड़की सफुरा जरगर लगातार भाषण देती रही। लोगों को उकसाती रही, एक भी नरमपंथी सामने नहीं आया। लेकिन जैसे ही अब उसकी गिरफ्तारी हुई, सभी एक सुर में सामने आये और बोले कि मजहब को बदनाम किया जा रहा है, भारत में इस्लाम्फोबिया बढ़ रहा है। लेकिन सवाल यही मजहब को बदनाम कर कौन रहा है हिंसा करने वाले उनका मौन साथ देने वाले या फिर इस सबका विरोध करने वाले अभी भी समझ जाइये और संभल जाइये।

- विनय आर्य, महामन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

पर्यावरण दिवस पर विशेष परिचर्चा ...

आया वह भी एक विचारणीय बिंदु है। तापमान लगातार बढ़ रहा है, पहले समय में 40-42 का तापमान बहुत माना जाता था, अभी राजस्थान जैसे राज्यों में 50 के करीब तापमान डरावना है, भूकंप रोज-रोज आ रहे हैं, यह तमाम विचारणीय बिंदु हमें सोचने-समझने होंगे। वृक्षों का कितना महत्व है और पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें यज्ञ अवश्य करने चाहिए। इस समय हमारे साथ में जहां एक तरफ महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल सिक्किम श्री गंगा प्रसाद जी हैं वहीं दूसरी तरफ संसद में आर्य समाज का पक्ष रखने वाले सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी भी हैं। मैं सभी का पुन: स्वागत करते हुए आगे के कार्यक्रम के संचालन हेतु श्री विनय आर्य जी को आमंत्रित करता हूं कि आगे की कार्यवाही शुरू करें। श्री विनय आर्य जी ने प्रधान जी का आभार व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का सन्देश दिया।

श्री विनय आर्य जी ने सर्वप्रथम स्वामी सुमेधान्द जी को उद्बोधन हेतु आमन्त्रित किया।

पृथ्वी का श्रृंगार हैं-वृक्ष

आज दुनिया के सारे पर्यावरणविद चिंतित हैं क्योंकि प्रकृति का बिगड़ता संतुलन मानव मात्र के लिए एक बहुत बड़ी त्रासदी बनकर सामने खड़ा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि जो हमारे ऋषि-मुनियों ने, महर्षियों ने हमें जीवन पथ पर चलने का संदेश दिया था। हम उसका अनुकरण नहीं कर पा रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मानवमात्र को संदेश देते हुए कहा था कि जब तक हमारे राजा-महाराजा बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करते रहे, तब तक संपूर्ण प्रकृति कल्याणकारी बनी रही, क्योंकि यज्ञ पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा साधन है। हमारी संस्कृति यज्ञ की संस्कृति है। यज्ञ विश्व की नाभि है, जब मनुष्य की नाभि अपने स्थान से हिल जाती है तो सारा का सारा संतुलन खराब हो जाता है। इसी तरह से हमारी दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग यज्ञ न करने से सारा का सारा पर्यावरण खराब होता जा रहा है। स्थिति यह हो गई है कि हमारे घरों में वृक्ष नहीं लगाए जाते, वृक्ष धरती का श्रृंगार हैं। वृक्षों को लगाना बहुत जरूरी है, क्योंकि वृक्ष ही जीवन दायिनी शक्ति प्रदान करते हैं। गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने स्पष्ट कहा कि जैसे वृक्षों में पीपल है वैसे ही मनुष्यों में मेरा स्थान है। हमारे यहां पीपल-बरगद आदि वृक्षों का बड़ा सम्मान किया जाता है और वेदों में भी वृक्षों के रोपण के लिए जगह-जगह संदेश हैं। अत: हमें वृक्षों और यज्ञों के महत्व को समझना होगा। आर्य समाज द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मानव मात्र के लिए संदेश है कि वृक्ष लगाओ-यज्ञ करो और जीवन बचाओ। इस आयोजन के लिए मैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी, मंत्री जी और सभी आयोजकों को साधुवाद देता हूं।

- स्वामी सुमेधानंद सरस्वती
लोकसभा सांसद (सीकर)

विश्व पर्यावरण दिवस पर स्वच्छता का लें- संकल्प

आज पूरे विश्व में पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी और सभी अधिकारियों को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। सन 1972 में विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निश्चय किया गया था, तब से लेकर अब तक हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। आज हमारे राजभवन में भी विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया, जिसमें राज्य के मुख्यमंत्री और अनेक महानुभाव पधारे, हमने सबको गिलोय आदि पौधे वृक्षारोपण के लिए प्रदान किए। भारत में प्राचीन काल से प्रकृति का प्रेमी रहा है। प्रकृति परोपकार का पर्याय है।

हमारे यहां प्राचीन काल से प्रतिदिन यज्ञ करने का विधान था, यज्ञ करके ही भोजन ग्रहण करते थे। आज सब कुछ बदलता जा रहा है, इसलिए प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। जब हम गंदा करते हैं तो उसे स्वच्छ कौन करेगा? इसलिए यज्ञ करें और वातावरण को शुद्ध बनाएं। आपको पता होगा कि जब भोपाल गैस कांड हुआ तो उसमें जो आर्य परिवार यज्ञ करता था, वह सुरक्षित रहा। आजकल ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और वैचारिक प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है, लोग मूर्तियां और अनेक अन्य सामान नदियों में फेंक रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया, इस अभियान के तहत हमें आगे आना चाहिए और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए। इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए मैं सार्वदेशिक सभा को बधाई देता हूं कि आपने विश्व पर्यावरण दिवस पर यह रचनात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया है। धन्यवाद।

- गंगाप्रसाद जी, राज्यपाल सिक्किम

राष्ट्र को सर्वोपरि मानने वाला संगठन है - आर्यसमाज

आर्य समाज एक राष्ट्रवादी संगठन है। राष्ट्र को सर्वोपरि मानने वाला संगठन आर्यसमाज सदैव मानवमात्र के लिए कल्याणकारी आयोजन करता आ रहा है। आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी आदरणीय बंधुओं को मेरा प्रणाम। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को बधाई। भारत एक याज्ञिक देश है। हमारे यहां यज्ञ की पद्धति चलती थी, सब लोग प्रतिदिन यज्ञ करते थे, चाहे वैदिक कालीन युग हो, रामायण काल हो या महाभारत काल। हमारे पूर्वज यज्ञ को सर्वोपरि मानते थे। इसीलिए उस समय हमारे यहां आरोग्यता थी। आज पूरा विश्व कोरोना वायरस के चपेट में है, इस बीमारी से वही जीतेगा जिसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होगी। हमारे ऋषि-मुनि भी यही कहते थे कि अपना इम्यून सिस्टम ठीक रखिए। हमारे पूर्वज प्रकृति के संग रहते थे जब से मनुष्य विकासवाद की ओर आगे बढ़ा, तब से प्रकृति का दोहन शुरू हुआ। आपने देखा होगा कि लॉकडाउन के समय ढाई महीने में गंगा-यमुना, वायु सब अपने आप शुद्ध हो गए। यहां तक कि आसमान में तारे भी दिखाई देने लगे। अब आप सोचिए कि सब कुछ शुद्ध कैसे हो गया? क्योंकि

- निरन्तर पृष्ठ 5 एवं 6 पर

देशभर में विभिन्न आर्य संस्थाओं ने किया पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

महावीर नगर कोटा (राज.)

विज्ञान नगर कोटा (राज.)

कोटा (राज.)

सूर सागर, जोधपुर (राज.)

अजमेर (राज.)

रोहतक (हरियाणा)

जम्मू (ज.कश्मीर)

कच्छ (गुजरात)

झारखण्ड

अबोरह (पंजाब)

एटा (उ.प्रदेश)

भीलवाड़ा (राजस्थान)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं ने किया विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को पर्यावरण शुद्धि यज्ञ एवं वृक्षारोपण

पर्यावरण दिवस के अवसर पर यज्ञ करते हुए - आर्यसमाज शादीखामपुर, आर्यसमाज विकास नगर, आर्यसमाज कीर्ति नगर एवं आर्यसमाज नोरौजी नगर के अधिकारीगण

यज्ञ करते हुए - आर्यसमाज चूना मंडी पहाडगंज, आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, आर्यसमाज सूरजमल विहार एवं आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर के अधिकारीगण

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करते हुए सार्वदेशिक सभा के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, आर्य केन्दीय सभा के मन्त्री श्री हरिओम बंसल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री जोगेन्द्र खट्टर जी एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ता

देशभर में विभिन्न आर्य संस्थाओं ने किया पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

रोहतक (हरियाणा) | नवाशहर (पंजाब) | हापुड़ (उ.प्रदेश) | लखीराम अनाथाश्रम, रोहतक | भरुवा सुमेरपुर - हमीरपुर

राजभवन (सिक्किम) | उदालगुड़ी (असम) | लोहरदगा (झारखण्ड) | जोधपुर (राजस्थान) | सहारनपुर (उ. प्रदेश)

जोधपुर (राजस्थान) | गुजरात | कोटा (राजस्थान) | गुरुकुल त्रिपुरा

अवसाद (Depression) से बाहर कैसे आएं?

How a person can get away from depression?

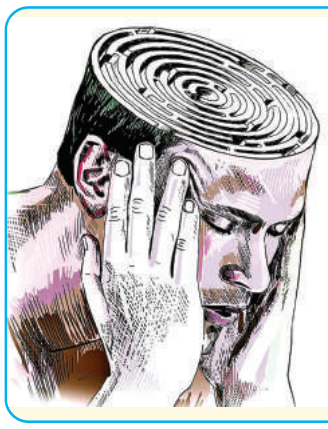

....जिसके मन में कुछ करने की उत्कण्ठा है वह कोई न कोई मार्ग निकाल ही लेता है। बिना दोनों हाथों के पैरों से लिखना तथा अन्य कार्य कर लेने वाले व्यक्ति भी देखे गये हैं। पैरों से विकलांग व्यक्तियों ने एवरेस्ट के शिखर पर विजय-पताका फहराई है। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। प्राय: देखा जाता है कि किसी अंग से विकलांग हो जाने पर भी व्यक्ति दूसरी इन्द्रियों पर आधिपत्य कर असम्भाव्य कार्यों को कर दिखाता है। यद्यपि उसे विकलांग होने के कारण अनेक कठिनाईयों से दो-दो हाथ करने पड़ते हैं परन्तु ईमानदारी से कार्य करने पर लोगों की सहानुभूति उस से जुड़ती चली जाती है। .....

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

अवसाद से पीड़ित व्यक्ति दु:खी, उदास, निरुत्साहित, शंकालु और चिन्तित दिखाई देता है। आन्तरिक और बाह्य दोनों कारणों से अवसाद उत्पन्न होता है।

आन्तरिक कारण

1. कार्य में असफलता-किसी कार्य में सफल नहीं होना परीक्षा में कम अंक या अनुत्तीण हो जाना, व्यापार में घाटा होना।

2. मानसिक आघात- किसी प्रियजन की मृत्यु, दु:खद समाचार, अनहोनी घटना, दुर्घटना आदि से मन को एकदम सदमा या आघात लगना।

3. मन की विक्षिप्तता- विक्षिप्त मन में कभी पागलपन, निराशा, विचित्र व्यवहार, झूठा आत्मविश्वास जैसे मैं बड़ा विद्वान् नेता, सिद्ध पुरुष हूँ, अपराध की भावना, चिन्ता, शंका, थकान तथा निद्रा की कमी दिखाई देती है।

4. दु:खों की अनुभूति - जिससे आहत होकर प्राणी उससे द्वेष या बचना चाहता है उसे दु:ख कहते है। उनको स्मरण करने से वह पुन: मन को व्यथित करता रहता है।

5. निराशा के विचार - अपनी क्षमताओं और सम्भावनाओं तथा किये हुये पुरुषार्थ का उचित फल या आकांशा के अनुकूल परिणाम नहीं निकलता तब व्यक्ति से निराशा के विचार आते हैं।

बाह्य कारण

1. आनुवंशिकता - जिसके माता-पिता या अन्य सदस्य अवसाद ग्रस्त होते हैं तो उनकी सन्तानों में भी इसके लक्षण प्रकट हो सकते हैं परन्तु यह अनिवार्य नहीं है। उत्साह वाला वातावरण, सक्रिय जीवन नियमित दिनचर्या, सन्तुलित आहार, व्यायाम, खेल, आसन-प्राणायाम इत्यादि जिसके जीवन के अंग बन गये हैं वह किसी भी आघात को सहन करने की सामर्थ्य रखता है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति अवसाद से ग्रस्त लोगों के पास रहता है तो उसमें भी ये लक्षण प्रकट हो सकते हैं। जिसका जीवन आशा, उल्लास और उत्साहित है उसे अवसाद का भय नहीं होता।

2. शारीरिक विकलांगता - यदि कोई व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से अक्षम या विकलांग है और कुछ बड़ा कार्य करने की इच्छा है परन्तु शारीरिक विकलांगता के कारण उसके सपने पूरे नहीं हो पाते तो इस असमर्थता के कारण वह अवसाद से घिर जाता है। वह सोचता है यदि आज मेरे हाथ-पैर ठीक हुये होते तो मैं अमुक दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करता और मेरे गले में भी अनेक पदक सुशोभित होते। परन्तु यह एक पहलू है। जिसके मन में कुछ करने की उत्कण्ठा है वह कोई न कोई मार्ग निकाल ही लेता है। बिना दोनों हाथों के पैरों से लिखना तथा अन्य कार्य कर लेने वाले व्यक्ति भी देखे गये हैं। पैरों से विकलांग व्यक्तियों ने एवरेस्ट के शिखर पर विजय-पताका फहराई है। **मन के हारे हार है मन के जीते जीत।** प्राय: देखा जाता है कि किसी अंग से विकलांग हो जाने पर भी व्यक्ति दूसरी इन्द्रियों पर आधिपत्य कर असम्भाव्य कार्यों को कर दिखाता है। यद्यपि उसे विकलांग होने के कारण अनेक कठिनाईयों से दो-दो हाथ करने पड़ते हैं परन्तु ईमानदारी से कार्य करने पर लोगों की सहानुभूति उससे जुड़ती चली जाती है।

3. निद्रा की कमी - आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य से शरीर के तीन आधार स्तम्भ है। व्यक्ति का बल, पराक्रम और स्वास्थ्य गाढ़ निद्रा पर ही आधारित है। शरीर एवं मन की थकान निद्रा से ही मिटती है। एक स्वस्थ युवक को छ:-सात घण्टे निद्रा लेना आवश्यक है। इसके लिये नियमित दिनचर्या होनी चाहिये। सोने से एक घण्टा पहले टी.वी., मोबाईल आदि देखने बन्द कर देने चाहियें। हल्का शास्त्रीय संगीत सुन सकते हैं। भोजन सायंकाल आठ बजे तक कर लेना उचित है। सोने का स्थान वायु के आवागमन वाला, शान्त और सुरक्षित होना चाहिये। मोबाईल 5-6 फुट की दूरी पर रखें। उत्तर दिशा की ओर सिर करके सोने से निद्रा बाधित होती है।

4. नशा करना - जितने भी मादक पदार्थ हैं वे अन्त में अवसादजनक ही होते हैं। जैसे तांगे में चलता घोड़ा चाबुक मारने से कुछ समय तक दौड़ता है और उसके पश्चात् फिर धीरे चलने लगता है। मादक पदार्थ स्नायुमण्डल एवं हृदय की गति को बढ़ा देते हैं जिसके कारण व्यक्ति अपने में स्फूर्ति अनुभव करता है परन्तु कुछ समय तक उनका प्रभाव रहता है और फिर पहले से अधिक थकान और अवसाद आ जाता है। इनसे छुटकारा पाने के लिये किसी भी प्रकार का नशा न करने का दृढ़ संकल्प करना, नशा करने वाले लोगों से दूर रहना ही श्रेष्ठ उपाय है। योग के आसन, प्राणायाम, ध्यान का अभ्यास करने से शरीर में समत्व आकर धीरे-धीरे नशा करने की आदत छुट जाती है। धूम्रपान, मद्यपान, अफीम, हीरोईन आदि की आदत युवक एवं युवतियों में बढ़ती जा रही है जो चिन्ता का विषय है।

- क्रमश:

पृष्ठ 4 का शेष

पर्यावरण परिचर्चा के विषय में आचार्य देवव्रत जी द्वारा ट्वीट

समझदार आदमी-मनुष्य घर में रहने लगा, मनुष्य जितना समझदार है उतना ही लापरवाह भी है। सारे पर्यावरण को अशुद्ध करने वाला और कोई नहीं, मनुष्य ही है। मनुष्य के घर में रहने से सारा वातावरण शुद्ध हो गया। सारी प्रकृति सुंदर हो गई, वह पक्षी जो कभी दिखाई नहीं देते थे वह भी वृक्षों पर खेलने लगे। मनुष्य को समझना होगा प्राणी जगत के लिए पर्यावरण को शुद्ध रखना होगा। देवपूजा संगतिकरण और दान इन कर्मों से जड़ देवता जल्दी प्रसन्न होते हैं, मतलब यज्ञ करने से ही पर्यावरण शुद्ध होगा। धरती पर ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं, धरती को हरियाली से सुंदर बनाएं। हमने जीरो बजट खेती का प्रावधान करके यह सिद्ध कर दिया है कि बिना यूरिया आदि खेत में डाले गऊ के गोबर से अच्छी खेती की जा सकती है, खेती भी एक अपने आपमें यज्ञ है लेकिन आज किसान ऐसे यूरिया और केमिकल प्रयोग कर रहा है, जिससे सारा अन्न-जल विषैला होता जा रहा है। अत: विश्व पर्यावरण दिवस पर हम यह भी विचार करें कि खेती के नाम पर यूरिया का प्रयोग न करें, जैविक खेती करें। इससे पर्यावरण का संरक्षण भी होगा और मनुष्य स्वस्थ भी रहेगा। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए पुन: सभी आयोजकों को बधाई और धन्यवाद।

- आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

संपूर्ण विश्व में आर्य समाज जैसी संस्था नहीं

आर्य समाज जैसी संस्था संपूर्ण विश्व में नहीं है। आर्यसमाज ही वह संगठन है जो मानव मात्र की रक्षा और सुरक्षा की बात करता है। आज पूरी दुनिया इस बात को महसूस कर रही है की प्रकृति के साथ जितना खिलवाड़ हो रहा है, पंचमहाभूतों की जो स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है उसमें अग्नि को छोड़ दिया जाए तो जल, वायु, आकाश और पृथ्वी सब कुछ बदलता जा रहा है। आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर हमें यह सोचना चाहिए कि इस प्रदूषित होते वातावरण को हम किस तरह शुद्धऔर कल्याणकारी बनाएं। मनुष्य की प्रवृत्ति बदलती जा रही हैं, मनुष्य ने यज्ञ करना बंद कर दिया है और जब तक हम यज्ञ नहीं करेंगे तब तक पर्यावरण संरक्षण संभव नहीं होगा।आज मनुष्य मानव से दानव बनता जा रहा है। हाथी जैसे लोकोपकारी पशुओं को मारने की बात और इसके साथ-साथ अनेकानेक विध्वंसकारी कार्य देख कर ऐसा लगता है कि जैसे मनुष्य केवल स्वार्थपूर्ण जीवन जी रहा है और पूरी तरह से खिलवाड़ कर रहा है। उसी का परिणाम है कि आज इस तरह की मुसीबतों का सामना हम कर रहे हैं। वेदों में जो बताया गया है कि हम यज्ञ करें और यज्ञ कराएं, मनुष्य वाणी से और कर्म से परोपकारी बने, सदाचारी बनें तो प्रकृति भी कल्याणकारी बनेगी। आज का यह कार्यक्रम बहुत रचनात्मक है। आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई।

- डॉ सत्यपाल सिंह (सांसद बागपत) एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

जूम एप्प के माध्यम से आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में पूरे भारत से और विदेशों से भी आर्य समाज के अनेक अधिकारी, कार्यकर्ता आदि महानुभाव जुड़े थे। श्री विनय आर्य जी ने इस कार्यक्रम का संचालन किया और सभी आर्य महानुभावों और विद्वानों से निवेदन करते हुए कहा कि सभी महानुभावों द्वारा संबोधन करवाना संभव नहीं हुआ लेकिन सभी इस कार्यक्रम से जुड़े यह अपने आपमें गौरव की बात है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने सभी विशिष्ट अतिथियों और सभी प्रांतीय सभाओं के सम्मानित अधिकारियों का धन्यवाद किया तथा सब से यह अनुरोध किया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सबको निरंतर अपना योगदान देना होगा। कार्यक्रम के अंत में उत्तराखंड सभा के प्रधान श्री विनय विद्यालंकार जी ने शांति पाठ कराया और प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रकृति प्रेमी पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी जिनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग और नियम है कि सुबह-शाम पार्क में जाकर सैर करना है, उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस पर सभी विशिष्ट अधिकारियों, अतिथियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को अपना आशीर्वाद देते हुए संदेश भिजवाया कि प्रकृति का जो प्रकोप आज हम देख रहे हैं वह मानव मात्र के लिए चिंता की बात है। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि प्रकृति दोबारा अपने कल्याणकारी रूप में परिवर्तित हो और सारे संसार में सुख शांति कि फिर से हवा चले, सब निरोग हों, स्वस्थ हों और सब का जीवन उन्नति प्रगति और सफलता के पथ पर आगे बढ़ें, सभी को मेरा आशीर्वाद और बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों एवं आर्य संस्थानों को आवश्यक दिशा-निर्देश

आदरणीय प्रधान जी/मंत्रीजी

माननीय महोदय, सादर नमस्ते

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ऑनलाईन बैठक में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर पूर्व चर्चानुसार आपकी सूचनार्थ यह पत्र प्रेषित किया जा रहा हैं। कृपया अपने प्रान्त की आर्य समाजों तक यह भेजकर उन्हें सूचित करें-

1. विगत 3 मई को भारतवर्ष और विदेशों में स्थित आर्यसमाजों एवं आर्यजनों ने उत्साहपूर्वक सामुहिक तौर पर एक समय में यज्ञ किया। इसका जन सामान्य पर एक अच्छा प्रभाव हुआ। यज्ञ का संदेश करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचा। इसमें आप सभी की, आर्यजनों की महती भूमिका रही, तभी यह संभव हो पाया एतदर्थ हम सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर भी देश की सभी आर्य समाजों ने पार्कों में तथा अपने घरों पर काफी उत्साहपूर्वक यज्ञ भी किया और वृक्षारोपण का कार्य भी किया, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। 5 जून को ही शाम 4.30 से 5.30 तक यज्ञ और पर्यावरण पर एक कार्यशाला का आयोजन 'जूम' ऐप के माध्यम से आयोजित किया गया, जिसमें गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के माननीय राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी, लोकसभा सांसद डा. सत्यपाल सिंह जी तथा लोकसभा सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये। यह कार्यशाला अत्यन्त सफल रही। इसमें सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभा के अनेक पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

2. जैसा कि आप सभी जानते हैं, स्वामी अग्निवेश हमेशा से विवादित बयान देने के अभ्यस्त हैं, वे आर्य समाज, वेद, स्वामी दयानन्द, और वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध भी कई बार बोलते रहे हैं। अनेक अमर्यादित, असैद्धान्तिक बातें जिन्हें समाज निन्दनीय मानता है, ऐसे कार्यों को करते रहे। विशेषकर हिन्दुओं के विरुद्ध उनकी भावनाओं पर प्रहार करना, ईसाईयत और मुस्लिम विचारधारा को प्रोत्साहित करने का दुष्कृत्य भी कर रहे हैं। इनका साथ इनके कुछ साथी मौन धारण करके और कुछ इनका खुला समर्थन करके कर रहे हैं। इस कारण हिन्दू समाज आर्यसमाज से क्षुब्ध हुआ है और कई स्थानों पर विवाद भी हुआ है।

अब ये मुसलमानों के मंच पर जा-जाकर प्राय: कुरान की आयतें और अल्लाह हो अकबर से अपना भाषण प्रारंभ करते हैं। अब एक नया जुनून जो आर्य समाज की मूल भावना और उद्देश्य को बुरी तरह प्रभावित करेगा, आर्य समाज की गरिमा धूमिल करेगा, आर्य बलिदानियों के बलिदान का उपहास उड़ायेगा, वह करने जा रहे हैं।

इनके साथ श्री विठ्ठलराव जी, जो हमेशा से श्री अग्निवेश के प्रत्येक बात के समर्थक रहे तथा श्री वेद प्रताप वैदिक जी, जिन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व ही हमारी पवित्र वैदिक यज्ञ पद्धति को विकृत करने का विचार फैलाया और जिसका प्रचार स्वामी आर्यवेश के निरन्तर साथ रहने वाले विशेष सहयोगी ब्र. दीक्षेन्द्र ने यू ट्यूब चैनल व फेसबुक पर डाला, जिसमें यज्ञ की आहुति अल्लाह, मोहम्मद, मरियम, ईसा मसीह का नाम लेकर भी दे सकते हैं, यह अवैदिक कार्य करने को कहा। ये तीन व्यक्ति और कुछ भ्रमित तथा ईसाई व मुस्लिम समाज के कुछ व्यक्ति एक नया संगठन बनाने की घोषणा कर चुके हैं।

इस नये संगठन का नाम विश्व आर्य समाज रखा गया हैं जिसमें ईसाई व मुसलमान (जो सनातन धर्म को नष्ट करने, हिन्दुओं पर अत्याचार करने, धर्मान्तरण करने वाले सम्प्रदाय के हैं) भी इस संगठन के सदस्य बनेंगे। मुसलमान भी आर्य समाज खोल सकेगें। यह नई योजना बनाई हैं। यह सर्वविदित है कि सम्पूर्ण आर्य जगत की देश-विदेश की आर्य समाजों के नेतृत्व के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पहले से ही अस्तित्व में है और वह अपना कार्य कर रही हैं। किन्तु अपनी व्यक्तिगत ऐष्णाओं और गैर-हिन्दु सम्प्रदायों से अन्यान्य कारणों से मेल जोल बढ़ाने के लिए यह निन्दनीय योजना बनाई हैं। पहले भी इन्होंने सार्वदेशिक सभा में विवाद खड़ा किया था अब उसके समानान्तर एक नया संगठन बनाकर आर्य समाज के मूल सिद्धान्तो, मान्यताओं और पवित्रता को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा हैं। यह एक अत्यन्त निन्दनीय व घोर अपराध हैं। इसका विरोध करते हुए आर्यजनों व आर्य समाजों को सचेत करना आवश्यक है, ताकि वे इनसे किसी प्रकार का कोई सबन्ध नहीं रखें, कोई सहायता ना करें और अपने परिसर में इनको आने से रोकें, और न ही कोई बैठक करने देवें। अपनी भावनाओं को पोषित करने के लिए आर्य समाज को भी दलगत राजनीति जैसा बनाने का इनका यह प्रयास है। किन्तु इनके कलंकित कार्य को सफल न होने देना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है। हमें महर्षि के बलिदान की रक्षा करनी हैं। अत: कृपया इसे गंभीरता से लेवें।

3. आर्य समाजों में निर्वाचन का समय अप्रैल से मई माह तक प्राय: होता हैं। किन्तु इस समय लॉकडाऊन के कारण यह संभव नहीं हो पाया। 15 मई के पश्चात् शासन के आदेशानुसार हमारे भी सत्संग नहीं हो पा रहे हैं। इस कारण 15 मई के पश्चात् निर्वाचन नहीं हो पाये। उपस्थिति, तथा मासिक शतांष भी प्रभावित हुआ। आगे भी धार्मिक स्थलों पर उपस्थिति कब तक प्रतिबंधित रहेगी कहा नहीं जा सकता। इस परिस्थिति में निर्वाचन को लेकर समाजों में अनिश्चितता व्याप्त हैं। अत: उन्हे निम्न प्रकार मार्गदर्शन प्रेषित किया जा रहा है -

(अ.) वर्तमान कार्यकारिणी जहां 15 मई तक निर्वाचन नहीं हुए है, वहां उस कार्यकारिणी का आगामी छ: माह तक कार्यकाल बढ़ाया जाता हैं। सरकार द्वारा धार्मिक स्थलों पर प्रतिबन्ध हटाये जाने के बाद सुविधानुसार चुनाव सम्पन्न करा लें।

(ब.) निर्वाचन से पूर्व सदस्यों से नियमानुसार शतांश प्राप्त किया जावे और उपस्थिति 1 अप्रैल 2019 से 15 मार्च 2020 तक को आधार मानकर निर्वाचन करवाया जावे। सभाओं के देय दशांश भी यथाशीघ्र उन्हें भेज दें।

सत्संग - इन दिनों आर्य समाजों में साप्ताहिक सत्संग नहीं हो रहे हैं। किन्तु सत्संग हमारे संगठन की प्रमुख कड़ी हैं। सदस्यों से चर्चा होती रहे, वे यज्ञ से जुड़े रहें, यह सब आवश्यक हैं। इसलिए ऑनलाईन मोबाईल पर सत्सग प्रारंभ करें।

यदि यह सम्भव नहीं है तो किसी स्थान पर चार व्यक्ति एकत्रित होकर भी यज्ञ कर सकते हैं। परन्तु स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लंघन न हो यह भी ध्यान देना है। इसके अतिरिक्त आवश्यक रूप से रविवार को परिवार जन के साथ यज्ञ करने की, सत्संग की परम्परा का निर्वाह अवश्य करें। इन दिनों यू ट्यूब पर आर्य सन्देश चैनल पर प्रतिदिन प्रात: 6 से 7 बजे एवं रविवार को 8 से 10 बजे सत्संग व प्रवचन होते हैं उसका भी लाभ आर्यजन लेवें यह उन्हें जानकारी देवें।

कोष - कोरोना की आपात स्थिति में आर्य समाजों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिसमें समाज का और सदस्यों का काफी धन भी निश्चित रूप से लगा है। यह करना भी आवश्यक था। इस समयावधि में समाजों की आय भी प्रभावित हुई है, खर्चा अधिक हो गया। कोरोना की लॉकडाऊन स्थिति कब तक रहेगी यह निश्चित नहीं है, आय के साधन अवरुद्ध हैं। इसलिए अपनी समाज की व्यवस्था को संचालित करने के लिए कुछ कोष सुरक्षित रखें। उक्त विषय में यदि आपको किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो तो कृपया नि:संकोच मुझसे 9826655117 पर सम्पर्क करने का कष्ट करें।

(प्रकाश आर्य)

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक समाचार

श्री राजकुमार चौहान जी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कर्मचारी एवं आर्यसमाज सिंध (पाकिस्तान) के पूर्व सदस्य श्री राजकुमार चौहान जी की पूज्य माताजी जी का 8 जून की रात्रि 1 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री अमरजीत शास्त्री जी की धर्मपत्नी का निधन

वैदिक विद्वान श्री अमरजीत शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती धीरज आर्या जी का अमेरिका में हुई एक कार दुर्घटना में निधन हो गया। इस दुर्घटना में श्री अमरजीत शास्त्री जी एवं उनके दोनों बच्चों को भी चोटें आई हैं। अस्पताल में उनका उपचार चल रहा है।

आचार्य जीवन प्रकाश शास्त्री जी को पितृशोक

आचार्य जीवन प्रकाश शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री गंगा राम आर्य जी का 1 जून, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 जून, 2020 से रविवार 14 जून, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11-12 जून, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 जून, 2020

प्रदूषण

राहों पर भागते असंख्य वाहन
जानदार और बेजान-दोनों तरह के।
गधे-घोड़े, बैल और ऊंट से लेकर
स्कूटर, कार, बस और ट्रक तक।
सभी अपनी-अपनी हैसियत के हिसाब से
धूल-धुंआ उड़ाते हैं-प्रदूषण फैलाते हैं।
प्रकृति के पावन प्रांगण को
विषाक्त बनाते हैं।
जब ये पास से गुजरते हैं-
तो आंखें मूंद लेता हूं
सांसों को रूमाल से छान लेता हूं
पर जब देखता हूं,
खुद इंसान के द्वारा उड़ाई गई-
उसकी दुष्वृतियों की अदृश्य धूल
उसकी कुटिलताओं से निकलता स्याह धुआं
उसकी छलनाओं से झरती विषाक्त गैसें
और, पूरी धरती को झकझोरता
उसके अहंकार का झंझावत
तो सिर थाम के बैठ जाता हूं।
क्योंकि- क्या आंख मूंदने से
इसका दाह हटेगा?
क्या नाक ढकने से
इसका विष छनेगा?
क्या कदमों को रोकने से
इसका प्रसार थमेगा?
नहीं, प्रदूषण यह अंतहीन है
अंतवर्ती है, सूक्ष्म है और बदतर भी।

- डॉ. पूर्ण सिंह डबास

आर्यजगत के आजीवन ब्रह्मचारीगण अपना विवरण भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज के उत्थान और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित उन सभी आजीवन ब्रह्मचारियों, जो आजीवन अविवाहित रहकर महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। सभा ऐसे सभी ब्रह्मचारियों के कल्याणार्थ विशेष योजना तैयार करना चाहती है। अत: आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती युवक-युवतियां अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर रजिस्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

॥ ओ३म् ॥

गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट (पंजी.)
द्वारा संचालित
गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ

स्थान सीमित   स्थान सीमित

गुरुकुल में प्रवेश के लिये
ऑनलाईन परीक्षा की **अंतिम तिथि 25 जून** है
अत: छात्रों की मार्कशीट-आधार कार्ड भेजकर शीघ्र संपर्क करें
9977987777, 9977967777, 9977957777

विशेषताएँ

(1) आर्ष पाठ्यविधि, कक्षा 5वीं (प्रथमा) से एम.ए (आचार्य) तक।
(2) संस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य, प्राच्य व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी आदि आधुनिक विषय।
(3) संस्कृत संभाषण एवं इंग्लिश स्पोकन।
(4) सस्वर वेदपाठ शिक्षा।
(5) कम्प्यूटर ज्ञान।
(6) योग अभ्यास एवं शारीरिक प्रशिक्षण।
(7) गुरुकुलीय दिनचर्या में अनुशासित जीवनचर्या।
(8) बिना किसी जाति-भेदभाव के सभी को समान शिक्षा-आवास एवं भोजन आदि की व्यवस्था।

-कार्यालय-
गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट
आर्य समाज- 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाडिया रोड, इन्दौर (म.प्र.) 452016
E-mail: aryasamajindore1@gmail.com, Mob. 9977957777, 9977987777, 9977967777

परोपकारिणी सभा, अजमेर
द्वारा संचालित
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान

प्रवेश प्रारम्भ

योग्यता- ८वीं उत्तीर्ण या १४ वर्ष आयु
विषय- आर्ष पाठविधि से संस्कृत व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, साहित्य, वक्तृत्व कला
शुल्क- पूर्ण नि:शुल्क

सम्पर्क सूत्र- 8824147074

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह